शिक्षा की प्रकृति
(NATURE OF EDUCATION)

शिक्षा की प्रकृति की विभिन्न ढंगों से व्याख्या की जा सकती है।

I. शिक्षा का विश्लेषणात्मक अर्थ (Analytical Meaning of Education)

ऊपर वर्णित विश्लेषण के अन्तर्गत शिक्षा के शाब्दिक, संकुचित, विस्तृत, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा भारतीय विचारधारा के अनुसार तथा पश्चिमी विचारकों तथा शिक्षाशास्त्रियों के विचारों की व्याख्या की गई है। अब इस शिक्षा के विश्लेषणात्मक अर्थ को समझेंगे—

1. शिक्षा—एक जीवनपर्यन्त प्रक्रिया (Education—A Life Long Process)

शिक्षा को केवल शिक्षण संस्थाओं में बच्चों को दी गई शिक्षा तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। यह जन्म से मृत्यु तक चलती रहती है। इसमें मानव व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले सभी पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। अन्य शब्दों में प्रत्येक व्यक्ति जीवनपर्यन्त विभिन्न अनुभवों तथा क्रियाओं द्वारा कुछ न कुछ सीखता रहता है। जैसा कि **मैडम पॉल रिचर्ड** (Paul Richard) ने भी व्यक्त किया है कि व्यक्ति की शिक्षा "उसके जन्म से आरम्भ होनी चाहिए और इसे उसके जीवनपर्यन्त चलते रहना चाहिए।"

2. शिक्षा—निहित प्रक्रियाओं का प्रकटीकरण है (Education—Unfolding of Innate Process)

प्रत्येक बालक में कुछ शक्तियाँ, क्षमताएँ, योग्यताएँ निहित होती हैं और शिक्षा को उनके प्रकटीकरण के लिए अवसर प्रदान करना है न कि बालक के मस्तिष्क में जबर्दस्ती कुछ भरना है। श्री अरविन्द (Aurobindo) का यह मानना है, "शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य उस छिपी हुई आत्मा को बाहर निकालना होना चाहिए, जो सर्वोत्तम है तथा इसे उचित प्रयोग के लिए उत्तम बनाना है।" ("The chief aim of education should be to help the growing soul to draw out in itself which is best and make it perfect for a noble use.")

3. शिक्षा—व्यक्तिगत तथा सामाजिक (Education—Individual as well as Social)

शिक्षा की प्रक्रिया के मनोवैज्ञानिक पक्ष के अनुसार, शिक्षक को बालक की प्रकृति, रुचियों, क्षमताओं तथा सीमाओं का ज्ञान होना चाहिए। प्लेटो (Plato) द्वारा समाज की सेवा के लिए प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताओं के अनुरूप शिक्षा की योजना दी गई। विलियम टी. हैरिस (William T. Harris) के अनुसार "शिक्षा समाज के साथ संगठन के लिए व्यक्ति को तैयार करना है। व्यक्ति को इस प्रकार से तैयार करना है कि वह अपने साथियों की सहायता कर सके तथा बदले में उनसे सहायता प्राप्त कर सके।" ("Education is preparation of the individual for the reciprocal union with society, the preparation of the individual so that he can help the fellow men and in return receive their help.") भारतीय दार्शनिकों ने भी इसी विचारधारा पर बल दिया है।

Scanned with CamScanner

4. शिक्षा—एक गतिशील प्रक्रिया (Education—A Dynamic Process)

शिक्षा द्वारा मनुष्य अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरन्तर विकास करता है। शिक्षा जीवन है और जीवन ही शिक्षा है और यही कारण है कि जनजीवन स्थिर नहीं रहता तो शिक्षा स्थिर कैसे रह सकती है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। यह समय, स्थान, आवश्यकताओं, परिस्थितियों तथा समस्याओं के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। यदि शिक्षा गतिशील न होती तो हम विकास पथ पर अग्रसर नहीं हो पाते।

5. शिक्षा—एक द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया (Education—A Bi-polar Process)

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एडम्स (Adams) ने अपने कार्य में शिक्षा को एक द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया माना है। उसने शिक्षा के सम्प्रत्यय का विश्लेषण निम्नलिखित ढंग से किया—"शिक्षा एक द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे को इस प्रकार प्रभावित करता है कि उसमें ऐच्छिक परिवर्तन लाए जा सकें। यह प्रक्रिया उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है; यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक का उद्देश्य निश्चित होता है, और वह इसी उद्देश्य के अनुरूप ही बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाता है। वे साधन जिनसे बालक के व्यवहार में परिवर्तन आता है, दो हैं—(i) अध्यापक के व्यक्तित्व का बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव, (ii) ज्ञान के विभिन्न तत्वों का प्रयोग।"

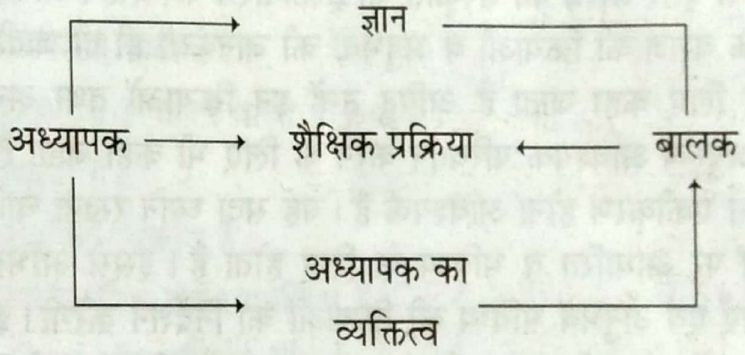

अत: इस प्रक्रिया में अध्यापक तथा बालक दोनों ही महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया इन दोनों के बीच अन्त:क्रिया के कारण ही सम्भव है।

6. शिक्षा—एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया (Education—A Tri-polar Process)

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी (John Dewey) ने भी शिक्षा को एक प्रक्रिया माना है, परन्तु एक द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया की अपेक्षा एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया। उसने इसमें एक तीसरा ध्रुव और जोड़ दिया और वह था सामाजिक वातावरण क्योंकि—

- शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है क्योंकि बालक की शिक्षा सामाजिक वातावरण में ही सम्पन्न होती है।
- यदि हम बालक को शिक्षित करना चाहते हैं तो उसकी अन्तर्निहित शक्तियों के बारे में जानना आवश्यक है, परन्तु यह भी सत्य है कि उसे समाज से अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि बालक का विकास दो कारकों—वातावरण तथा वंशानुक्रम का परिणाम है।
- पाठ्यक्रम का निर्माण समाज की परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं के अनुसार ही किया जाता है।

Scanned with CamScanner

अतः सामाजिक वातावरण एक ध्रुव तथा अन्य ध्रुव अध्यापक तथा विद्यार्थी हैं—

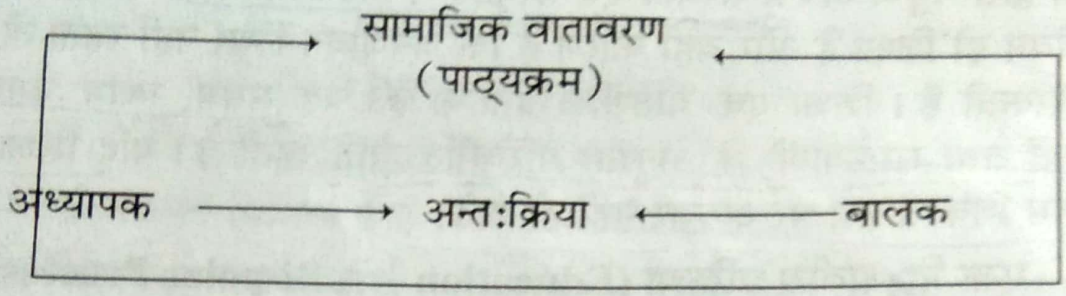

शिक्षा

इस प्रकार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें अध्यापक तथा बालक के मध्य अन्तः क्रिया होती है तथा यह अन्तःक्रिया सामाजिक वातावरण में सम्पन्न की जाती है, जो शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाती है।

Scanned with CamScanner